

झाँसी

शुक्रवार, 9 अक्टूबर 2026

वर्ष 19 अंक 122

पृष्ठ 8 मूल्य ₹ 3.00

[www.epaperjantaunion.com](http://www.epaperjantaunion.com)

रेलवे कर्मचारियों को अब मनपसंद स्थान पर मिलेगी नियुक्ति...- 3

संगठन की एकजुटता, विजय का संकल्प...- 8

## सार संक्षेप

रूस-यूक्रेन युद्ध: डोनेट्स्क के क्रामाटोर्सक में ग्रीष्म ऋतुबारी, 33 की मौत और 18 घायल

**क्रामाटोर्सक (जीएनएस)।** पूर्वी यूक्रेन के क्रामाटोर्सक शहर में, जो यूक्रेन का एक मजबूत गढ़ है, एक रूसी बम सड़क पर गिरा। इस हमले में कम से कम 33 लोगों की मौत हो गई और 18 अन्य घायल हो गए। यह इस साल यूक्रेन में हुए सबसे घातक हमलों में से एक है। न्यूज एजेंसी रॉयटर्स के अनुसार, यह हमला उस इलाके में हुआ जहाँ शहर की दो बसें चल रही थीं, जिससे शहर का एक आम हिस्सा तबाही के मंजूर में बदल गया। यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमीर ज़ेलेंस्की ने उस जगह को बस स्टॉप बताया। क्षेत्रीय गवर्नर वादिम फिलार्शिन ने टेलीग्राम पर कहा कि उनके (रूसियों के) लिए यात्रियों से भरी बस एक आकर्षक निशाना है, क्योंकि एक ही हमले में ज्यादा से ज्यादा लोगों की जान ली जा सकती है। यूक्रेनी पुलिस की जारी की गई तस्वीरों में बिखरे हुए मलबे के बीच शव पड़े हुए दिखाई दिए, जबकि पास ही एक बस का जला हुआ ढांचा भी देखा जा सकता था। रूस ने बार-बार इस बात से इनकार किया है कि उसने फरवरी 2022 में यूक्रेन पर हमले के दौरान जान-बूझकर आम नागरिकों को निशाना बनाया।

**सऊदी अरब को एयर डिफेंस और तकनीकी मदद देगा तुर्की, यमन में हमले के लिए सैनिक नहीं भेजेगा तुर्की (जीएनएस)।** तुर्की ने यमन में ईरान-समर्थित हथौड़ी विद्रोहियों के खिलाफ सऊदी अरब की लड़ाई में अपनी भूमिका को लेकर एक साफ रुख अपनाया है। अंकारा ने कहा है कि वह सऊदी अरब की सुरक्षा में मदद करने के लिए तैयार है, लेकिन आक्रामक हमले करने के लिए सैनिक नहीं भेजेगा। विदेश मंत्री हाकान फिदान ने गुरुवार को कहा कि अंकारा इस बात का आकलन कर रहा है कि सऊदी अरब और पाकिस्तान के साथ हाल ही में हुए मक्का संयुक्त रक्षा समझौते के तहत वह किस तरह की सैन्य मदद दे सकता है। उन्होंने जोर देकर कहा कि यह समझौता सामूहिक सुरक्षा के लिए है, न कि हथियारों के खिलाफ सैन्य अभियान शुरू करने के लिए। ये बातें तब सामने आई हैं जब सऊदी अरब पर हमलों में तेजी आने के बाद तीनों देश आपस में तालमेल बढ़ा रहे हैं। यमन में लंबे समय से चल रहे गृहयुद्ध के फिर से भड़कने और अमेरिका-ईरान के बीच तनाव के माहौल में रियाद को हथौड़ी मिसाइलों और ड्रोनों से निशाना बनाया गया है।

**श्रीलंका में तपेदिक से जंग को ताकत देगा भारत, पहुंचाई 3 टन जरूरी टीबी दवाइयां कोलंबो (जीएनएस)।** श्रीलंका में भारत के हाई कमिश्नर संतोष झा ने श्रीलंका के स्वास्थ्य और जनसंचार मंत्री नलिनदा जयतिस्सा को टीबी (तपेदिक) के इलाज में काम आने वाली जरूरी दवाइयों की एक खेप सौंपी। यह दवाइयां बुधवार को सौंपी गईं। संतोष झा ने एक्स पर पोस्ट किया टीबी के खिलाफ लड़ाई में साथ खड़े हैं! आज स्वास्थ्य और जनसंचार मंत्री डॉ. नलिनदा जयतिस्सा को टीबी-रोधी जरूरी दवाइयों की 3 टन की खेप सौंपकर खुशी हुई। ये दवाइयां श्रीलंका में टीबी के इलाज और उसे रोकने की कोशिशों में मदद करेंगी और टीबी से निपटने की देश की क्षमता को मजबूत करेंगी।

# जानता यूनियन



अधिकतम : 35° से.  
न्यूनतम : 22° से.

[jantaunion@gmail.com](mailto:jantaunion@gmail.com)



मामले में आया गजब का टिवस्ट

## सीईसी ज्ञानेश कुमार पर घमासान के बीच 42 पूर्व जजों ने किया विपक्ष पर जोरदार पलटवार



**नई दिल्ली (जीएनएस)।** चुनाव आयोग और मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) ज्ञानेश कुमार को लेकर सियासी टकराव अब सीधे लोकतांत्रिक संस्थाओं की विश्वसनीयता के सवाल तक पहुंच गया है। एक ओर कांग्रेस और विपक्ष लगातार चुनावी प्रक्रिया, वोटर लिस्ट के स्पेशल इंटेन्सिव रीविजन (एसआईआर) और

कथित 'वोट चोरी' को लेकर हमलावर हैं, वहीं दूसरी ओर 42 पूर्व न्यायाधीशों ने खुला पत्र जारी कर छद्म के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान पर गहरी चिंता जताई है। पूर्व न्यायाधीशों ने इसे 'निहित राजनीतिक हितों से प्रेरित सुनियोजित अभियान' बताते हुए कहा कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र को अस्थिर करने के

गंभीर परिणाम हो सकते हैं म आपको बता दें कि 42 पूर्व न्यायाधीशों ने अपने पत्र में कहा है कि सीईसी ज्ञानेश कुमार को 'कठपुतली', 'चोर' और 'समझौता कर चुके व्यक्ति' जैसे शब्दों से निशाना बनाया जा रहा है। उन्होंने चुनाव कराने वाले अधिकारियों को सार्वजनिक रूप से अपमानित करने और सत्ता बदलने पर उनके खिलाफ कार्रवाई की चेतावनी दिए जाने पर भी तीखी आपत्ति जताई। उनका कहना था कि लोकतांत्रिक संस्थाओं की आलोचना करना अधिकार है, लेकिन संस्थाओं को बदनाम करना लोकतांत्रिक मर्यादा नहीं है।

पूर्व न्यायाधीशों ने उन एक्विविस्ट संगठनों पर भी निशाना साधा, जो लगातार चुनाव आयोग के खिलाफ

कानूनी लड़ाई लड़ रहे हैं। पत्र में कहा गया कि कुछ संगठन लंबे समय से चयनात्मक मुकदमों के लिए जाने जाते हैं और लगातार याचिकाएं दायर कर आरोपों को कानूनी आवरण देने की कोशिश करते हैं, लेकिन 'बहुत कम मौकों पर सबूत पेश करते हैं।' यह टिप्पणी स्पष्ट रूप से सीजेपी की ओर से सीईसी ज्ञानेश कुमार पर लगाए जा रहे गंभीर आरोपों के संदर्भ में मानी जा रही है।

पूर्व न्यायाधीशों ने कांग्रेस के रुख पर भी सवाल उठाया। उन्होंने पूछा कि जिस ईवीएम और चुनावी व्यवस्था के जरिए कांग्रेस सत्ता में आई और चुनाव जीते, उसी व्यवस्था की विश्वसनीयता पर सवाल उठाए जाने पर उसके अपने चुनावी नतीजों को लेकर संदेह क्यों नहीं किया जाता।

पत्र में यह भी कहा गया कि चुनाव आयोग की ओर से मांगा गया शपथपत्र लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने अब तक प्रस्तुत नहीं किया है। पूर्व न्यायाधीशों ने कांग्रेस के लंबे राजनीतिक इतिहास का हवाला देते हुए सवाल उठाया कि पांच दशक से अधिक समय तक देश पर शासन करने वाली पार्टी अब उसी की व्यवस्था को कठघरे में खड़ा कर रही है, जिसने उसे सत्ता तक पहुंचाया। दूसरी तरफ कांग्रेस पीछे हटने के मूड में नहीं है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने लगातार दूसरे दिन इण्डिया ब्लाक के नेताओं के लिए दोपहर के भोजन की मेजबानी की और इसके बाद विपक्ष के नेताओं ने गांधी मेमोरियल पहुंचकर शांतिपूर्ण धरने की घोषणा की। राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र

मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत और सीईसी ज्ञानेश कुमार पर हमला बोलते हुए आरोप लगाया कि एक 'अपराधिक साजिश' के जरिए लोकतंत्र को हाईजैक किया जा रहा है। कांग्रेस का कहना है कि विपक्ष की लड़ाई लोकतंत्र, मतदाताओं और आम नागरिकों के अधिकारों की रक्षा के लिए है इसी बीच, सीजेपी के संस्थापक अधिजीत दिपके ने भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर 'लोकतंत्र की हत्या' और 'वोट चोरी' का आरोप दोहराया। एसआईआर के खिलाफ आयोजित प्रदर्शन में उन्होंने आरोप लगाया कि मतदाता सूची से लोगों के नाम हटाने की प्रक्रिया का उद्देश्य बीजेपी के विरोध में खड़े मतदाताओं को मतदान के

अधिकार से वंचित करना है। दिपके ने साफ कहा कि सीईसी ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे तक विरोध प्रदर्शन जारी रहेगा। हम आपको बता दें कि सीजेपी के साथ अब यूट्यूबर ध्वव राठी भी जुड़ गये हैं। बहरहाल, इस पूरे विवाद ने अब एक बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या चुनावी प्रक्रिया पर सवाल लोकतंत्र को मजबूत करने की कवायद है या चुनावी संस्थाओं की विश्वसनीयता को कमजोर करने वाला राजनीतिक अभियान है? एक तरफ विपक्ष अपने आरोपों को लोकतंत्र और मताधिकार की लड़ाई बता रहा है, तो दूसरी तरफ 42 पूर्व न्यायाधीशों का मोर्चा इन आरोपों को संस्थागत स्थिरता के लिए गंभीर खतरा बता रहा है।

## जो परिणाम जर्सी में लाए, वहीं में भी वैसी ही उम्मीद, 470 खिलाड़ियों को पुलिस नियुक्ति पत्र सौंपते हुए बोले सीएम योगी



**लखनऊ (जीएनएस)।** उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने बृहस्पतिवार को कहा कि 'जर्सी' में आपने जो परिणाम लाए हैं, 'वर्दी' में भी उसी प्रकार की अपेक्षा आपसे सरकार को रहेगी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने यहां लोकभवन में 470 कुशल खिलाड़ियों को पुलिस सेवा में नियुक्ति पत्र वितरित करने के बाद समारोह को

संबोधित करते हुए कहा कि जर्सी (खिलाड़ियों का परिधान) में जो कार्य आप करते थे और जो परिणाम आप लाए हैं, सरकार 'वर्दी' (पुलिस की वर्दी) में भी उसी प्रकार की अपेक्षा आपसे करती है।

योगी ने कहा, "आप जर्सी में अपने क्षेत्र में कुशल खिलाड़ी इसलिए हुए, क्योंकि आपने अपने जीवन को अनुशासन में ढाला,

टीम भावना के महत्व को समझा, अपनी शक्ति और उसके सामर्थ्य को एक सही दिशा दी। समय की कीमत को पहचाना। मुख्यमंत्री ने कहा कि खेल में सीखा गया अनुशासन और टीम वर्क पुलिस सेवा की रीढ़ है। जब एक खिलाड़ी अनुशासित होकर मैदान में उतरता है तो वह विपरीत परिस्थितियों में भी जीत दर्ज करता है। यही जज्बा अब पुलिस सेवा के दौरान प्रदेश की कानून-व्यवस्था को मजबूत करने और आम जनता की सुरक्षा में काम आएगा। सरकार के इस कदम से राज्य के उभरते हुए एथलीटों और खिलाड़ियों को न केवल रोजगार का अवसर मिला है, बल्कि उत्तर प्रदेश पुलिस बल को भी अनुशासित और शारीरिक रूप से दक्ष जवान मिले हैं।

## भारतीय वायुसेना पर आकाश में भारत की दहाड़, पीएम मोदी और एयर चीफ मार्शल ए.पी. सिंह के बयानों ने दुश्मनों को बुरी तरह हिला डाला

**गाजियाबाद (जीएनएस)।**

भारतीय वायुसेना ने आज अपना 94वां वायुसेना दिवस पूरे गौरव और सैन्य शक्ति के प्रदर्शन के साथ मनाया। गाजियाबाद के हिंडन वायुसैनिक अड्डे पर आयोजित भव्य समारोह में देश ने एक बार फिर उस ताकत को देखा, जिसने दशकों से भारतीय आसमान की रक्षा की है और जरूरत पड़ने पर दुश्मन के घर में घुसकर उसे जवाब देने का सामर्थ्य साबित किया है। समारोह में वायुसेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल ए.पी. सिंह ने साफ शब्दों में कहा कि भारतीय वायुसेना हर चुनौती से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार है और ऑपरेशन सिंदूर ने उसकी तेज और प्रभावी युद्धक क्षमता का प्रमाण



दिया है।

वायुसेना प्रमुख ने कहा कि दुनिया के हालिया संघर्षों ने यह स्पष्ट कर दिया है कि आधुनिक युद्ध में वायु शक्ति किसी देश के राष्ट्रीय हितों और सुरक्षा की रक्षा का प्राथमिक

माध्यम बन चुकी है। उन्होंने ऑपरेशन सिंदूर का उल्लेख करते हुए कहा कि भारतीय वायुसेना ने इस अभियान में जिस गति से युद्धक कार्रवाई की, उसने उसकी युद्धक तैयारी और क्षमता को साबित किया।

31 अक्टूबर को सेवानिवृत्त होने जा रहे ए.पी. सिंह ने वायुसेना प्रमुख के रूप में अपने कार्यकाल को अपने जीवन का सबसे बड़ा सौभाग्य बताया। हम आपको बता दें कि हिंडन वायुसैनिक अड्डे पर समारोह की शुरुआत शानदार सैन्य परेड से हुई। तीनों सेनाओं के प्रमुखों, वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों और पूर्व वायुसेना प्रमुखों की मौजूदगी में आयोजन की गरिमा बढ़ाई। वायुसेना प्रमुख ए.पी. सिंह 1960 के दशक की एक पुरानी कार में पेरेंड स्थल पहुंचे, जबकि तीन हेलीकॉप्टरों ने 'ध्वज' संरचना में उड़ान भरकर आसमान में भारतीय वायुसेना की शक्ति का प्रदर्शन किया।

इसका डिजाइन बौद्ध धर्म के शांति और सजगता के मूल्यों को आधुनिक वास्तुकला के साथ जोड़ता है और यह ध्यान, विद्रोहपूर्ण शोध तथा पर्यटन के लिए एक महत्वपूर्ण स्थल उपलब्ध कराता है।

इसका डिजाइन बौद्ध धर्म के शांति और सजगता के मूल्यों को आधुनिक वास्तुकला के साथ जोड़ता है और यह ध्यान, विद्रोहपूर्ण शोध तथा पर्यटन के लिए एक महत्वपूर्ण स्थल उपलब्ध कराता है।

## लुटेरी दुल्हन गिरोह का पर्दाफाश: शादी के नाम पर दूल्हों को चूना लगाने वाली 3 महिलाओं समेत 5 गिरफ्तार

**देवास (जीएनएस)।**

मध्य प्रदेश की देवास पुलिस ने शादी के नाम पर लोगों से लाखों रुपये की ठगी करने वाले एक गिरोह का पर्दाफाश करते हुए तीन महिलाओं और दो पुरुषों को गिरफ्तार किया है। पुलिस की शुरुआती जांच में सामने आया है कि यह गिरोह अब तक शादी का झांसा देकर चार दूल्हों के परिवारों को अपना शिकार बना चुका है। अधिकारी ने बताया कि शुरुआती जांच में गिरोह द्वारा शादी के नाम पर चार दूल्हों के परिवारों को चूना लगाए जाने के बारे में पता चला है। बैंक नोट प्रेस थाने की प्रभारी प्रीति कटारे ने बताया कि गिरफ्तार आरोपियों की पहचान प्रीति सोनवने (21), लक्ष्मी श्रीनेत (32), कंचन सोनवने (45), अमर सुतार (32) और रमेश गोस्वामी (65) के रूप में हुई है। उन्होंने बताया कि इनमें से चार लोग महाराष्ट्र के चंद्रपुर जिले के रहने वाले हैं, जबकि एक आरोपी देवास का निवासी है।



## इलाहाबाद हाई कोर्ट ने शुरु किया मध्यस्थता अभियान, 31 दिसंबर तक सुलझेंगे लंबित केस



**लखनऊ (जीएनएस)।** रजिस्ट्रार (मध्यस्थता) भागीरथ वर्मा ने गुरुवार को कहा कि इलाहाबाद हाई कोर्ट, उसकी लखनऊ बेंच और निचली अदालतों में लंबित मामलों वाले पक्षकार, चल रहे मीडिएशन फॉर द नेशन 3.0 अभियान के तहत मध्यस्थता के जरिए अपने विवाद सुलझा सकते हैं। यह अभियान 1 अक्टूबर को शुरू हुआ और 31 दिसंबर तक चलेगा। इससे पक्षकारों को लंबी कानूनी लड़ाई में पड़े बिना आपसी सहमति से विवाद सुलझाने का मौका मिलेगा। वर्मा ने कहा कि पक्षकार मध्यस्थता के लिए आगे आ

सकते हैं और समझौते की संभावना तलाश सकते हैं। निचली अदालतों में चल रहे मामलों से जुड़े लोग संबंधित जिले के सिविल कोर्ट परिसर में काम करने वाली डिस्ट्रिक्ट लीगल सर्विसेज अथॉरिटी से संपर्क कर सकते हैं। वर्मा ने बताया कि जिन लोगों के मामले प्रयागराज में इलाहाबाद हाई कोर्ट या उसकी लखनऊ बेंच में चल रहे हैं, वे प्रयागराज में हाई कोर्ट लीगल सर्विसेज कमिटी या लखनऊ में उसकी सब-कमिटी से संपर्क कर सकते हैं। मुकदमे से जुड़े लोग अपने वकीलों से यह भी पता करने के लिए कह सकते हैं कि क्या उनके मामलों को मध्यस्थता के लिए भेजा जा सकता है। उपयुक्त मामलों में अदालत विवाद को मध्यस्थता के लिए भेज सकती है।



# रेलवे कर्मचारियों को अब मनपसंद स्थान पर मिलेगी नियुक्ति

**झाँसी जयूस।** रेलवे बोर्ड ने लाखों रैर-राजपत्रित कर्मचारियों को बड़ी राहत दी है। लंबे समय से अपने गृह जिले या मनपसंद स्थान पर तबादले का इंतजार कर रहे इन कर्मचारियों के लिए सेवा आधारित अनुरोध स्थानांतरण का संशोधित मॉड्यूल लागू कर दिया गया है।

यह नया सिस्टम रेलवे मानव संसाधन प्रबंधन प्रणाली पोर्टल पर क्रियान्वित किया गया है। रेलवे बोर्ड के संयुक्त निदेशक जया कुमार ने इस संबंध में आदेश जारी किया है। इस पहल से तबादला प्रक्रिया में अधिक पारदर्शिता और दक्षता आने की उम्मीद है। यह कदम कर्मचारियों की लंबे समय से चली आ रही मांग को पूरा करेगा।

नए नियमों के अनुसार, तबादले की पूरी प्रक्रिया को हर महीने की पहली तारीख को एक तय मासिक चक्र के तहत प्रोसेस किया जाएगा। यह सुनिश्चित करेगा कि आवेदनों पर नियमित रूप से विचार किया जाए।

नीति के आधार पर, 20 वर्ष से अधिक की नियमित सेवा पूरी कर चुके कर्मचारियों के अनुरोध स्थानांतरण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाएगी। आवेदनों को नियुक्ति तिथि के बढ़ते क्रम में व्यवस्थित किया जाएगा। जिसकी सेवा जितनी पुरानी होगी, उसे उतनी ही उच्च प्राथमिकता मिलेगी। यदि नियुक्ति तिथि और जन्म तिथि दोनों समान पाई जाती हैं, तो पोर्टल पर पहले आवेदन दर्ज करने वाले कर्मचारी को प्राथमिकता दी जाएगी। रिक्तियों की गणना के लिए मानक तय किए हैं। इंडेंट मैनेजमेंट सिस्टम के तहत उच्च ग्रेड की रिक्तियों को डाउनग्रेड करके वर्तमान ग्रेड के डायरेक्ट रिक्स्टमेंट कोटा के साथ जोड़ा जाएगा। अनुकंपा नियुक्ति के नए अभ्यर्थियों के लिए सीटें आरक्षित रखी गई हैं।

पिछले साल सीपरी बाजार थाना क्षेत्र के लहर गिर्द कालोनी में घरेलू विवाद के बाद एक शिक्षक ने लाइसेंसी हथियार से खुद को गोली मारकर जान दे दी थी। इस है कि ऐसे हथियारों से सुरक्षा के लिए एक भी फायर नहीं हो रहे हैं, बल्कि पुलिस रिकार्ड बता रहे हैं कि लाइसेंसी असलहों से खुदकुशी की घटनाएं हो रही है।

लाइसेंसी हथियारों से आत्महत्या, गुस्से में फायरिंग और हर्ष फायरिंग के कई मामले सामने आए हैं। ऐसे में लाइसेंस प्रक्रिया में मेंटल हेल्थ असेसमेंट को शामिल करने और हर रिन्यूअल पर इसकी दोबारा जांच की मांग उठ रही है।

**पांच साल में 25 लोगों ने लाइसेंस हथियार से दी जान**

उपलब्ध आंकड़ों के मुताबिक 2022 से 2026 अब तक के बीच लाइसेंस हथियार से आत्महत्या के 25 मामले सामने आए हैं। आंकड़ों के मुताबिक 2022 में चार, 2023 में छह, 2024 में छह, 2025 में आठ और 2026 में अब तक तीन आत्महत्याएं दर्ज हैं। इसी अवधि में गुस्से में फायरिंग और हर्ष फायरिंग की भी बड़ी संख्या सामने आई।

आवेदक के आपराधिक रिकॉर्ड, जरूरत और दूसरी निर्धारित शर्तों की जांच होती है। लेकिन सवाल यह है कि लाइसेंस मिलने के बाद अगर किसी व्यक्ति की मानसिक स्थिति बदलती है, वह लंबे समय तक तनाव, घरेलू विवाद या दूसरे गंभीर दबाव से गुजर रहा है तो इसकी जानकारी सिस्टम तक कैसे पहुंचेगी? विशेषज्ञों की ओर से इसी गैप को दूर करने की मांग की जा रही है। उनका कहना है कि लाइसेंस के रिन्यूअल के समय केवल पुराने रिकॉर्ड और दस्तावेज देखने के बजाय जरूरत के मुताबिक मानसिक स्वास्थ्य के जुड़े आकलन (मेंटल स्क्रीनिंग) को भी प्रक्रिया का हिस्सा बनाया जाना चाहिए। इससे ऐसे मामलों की पहचान करने में मदद मिल सकती है, जहां व्यक्ति खुद या दूसरों के लिए जोखिम बन सकता है।

**मेडिकल चेकअप के नाम पर लिया जाता है फिजिकल फिटनेस सर्टिफिकेट**

वर्तमान में मेडिकल चेकअप के नाम पर केवल एक बुनियादी फिजिकल फिटनेस सर्टिफिकेट लिया जाता है। इसमें आवेदक की शारीरिक संचालन की क्षमता तो जांची जाती है, लेकिन उसके

## सार्वजनिक जगहों पर हथियारों का प्रदर्शन भी जोखिम बढ़ा सकता

लाइसेंसी हथियार रखने वालों के लिए सुरक्षित स्टोरेज भी बेहद जरूरी है। हथियार और कारतूस को लॉक करके ऐसी जगह रखना चाहिए जहां तनाव या गुस्से के समय उनकी तत्काल पहुंच न हो। घरेलू विवाद या मानसिक दबाव की स्थिति में हथियार से दूरी बनाना और जरूरत पड़ने पर विशेषज्ञ की मदद लेना भी जरूरी है। सोशल मीडिया या सार्वजनिक जगहों पर हथियारों का प्रदर्शन भी जोखिम बढ़ा सकता है। ऐसे व्यवहार को हतोत्साहित करने के साथ लाइसेंस धारकों को हथियार की जिम्मेदारी और सुरक्षित इस्तेमाल के बारे में लगातार जागरूक करने की जरूरत है।

## न्यूज़ ब्रीफ

**पेट्रोल भरवाकर पंप कर्मचारी से मारपीट**

झाँसी जयसु। प्रेमनगर थाना क्षेत्र के राजगढ़ में एक पेट्रोल पंप कर्मचारी के साथ पेट्रोल भरवाने को लेकर विवाद हो गया। विवाद के चलते पंप कर्मचारी के साथ मारपीट कर दी। इसकी सूचना पुलिस को दी गई। प्रेमनगर थाना क्षेत्र में राजगढ़ में एक पेट्रोल पंप है। इस पंप पर पारस राजपूत नामक युवक काम करता है। बीते रोज चार लोग पेट्रोल पंप पर आए और वहांनों में पेट्रोल भरवा लिया। जैसे ही पैसा मांगा तो विपक्षियों ने पंप कर्मचारी पारस राजपूत की पिटाई कर दी। यह घटना वहां लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच की जा रही है।

**अमावस्या मेले के लिए चलेगी मेला स्पेशल झांसी जयसु।** चित्रकूट धाम कवीं में अश्विन अमावस्या मेले के अवसर पर यात्रियों को अतिरिक्त सुविधा प्रदान करने के उद्देश्य से मेला स्पेशल गाड़ियों का संचालन किया जा रहा है।

रेलवे के मुताबिक 09 से 11 अक्टूबर 26 तक एक मेला स्पेशल वीरांगना लक्ष्मी बाई झाँसी -चित्रकूट धाम कवीं-वीरांगना लक्ष्मी बाई झाँसी के मध्य, एक मेला स्पेशल झांसी-चित्रकूट धाम कवीं के मध्य संचालित की जाएगी। उपरोक्त सुविधा के अतिरिक्त गाड़ी संख्या 64613/64614 वीरांगना लक्ष्मी बाई झाँसी-बौदा मेमू को चित्रकूट धाम कवीं तक आवश्यकतानुसार विस्तारीकृत किया जायेगा। यात्रियों की संख्या बढ़ने की दशा में एक अतिरिक्त रैक स्टैंडबाई मोड़ में तैयार रखा जायेगा, जिसको आवश्यकतानुसार कानपुर-चित्रकूट के मध्य संचालित किया जायेगा।

**गृह कलह से परेशान युवती ने लगा ली फांसी**

झाँसी जयसु। गृह कलह से परेशान होकर युवती ने आत्महत्या कर ली। इसकी सूचना पुलिस को दी गई। सीपरी बाजार थाना क्षेत्र के अजय प्रताप परिवार समेत रहता है। बीती रात अजय प्रताप की पत्नी श्रीमती मनकू ने गृह कलह से परेशान होकर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। इसकी सूचना पुलिस को दी गई। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को भेज दिया।

**जहर खाकर युवक ने दी जान**

झाँसी जयसु। मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ के थाना चंदेरा के ग्राम स्यावनी निवासी राहुल सेन ने घरेलू विवादों से परेशान होकर विषाक्त पदार्थ का सेवन कर लिया जिससे उसकी हालत बिगड़ गई। उपचार के लिए मेडिकल कालेज लाया गया। यहां उसकी मौत हो गई। सूचना पुलिस को दी गई।

## काली पट्टी बांधकर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने कलेक्ट्रेट पर किया प्रदर्शन



**झाँसी जयसु।** विभिन्न मांगों और मुद्दों को लेकर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने गुरुवार को कलेक्ट्रेट परिसर में काली पट्टी बांधकर प्रदर्शन किया और धरना दिया। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने सरकार के खिलाफ नारेबाजी करते हुए अपनी मांगों को लेकर आवाज बुलंद की।

प्रदर्शन के दौरान कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने कहा कि जनहित से जुड़े मुद्दों पर सरकार को गंभीरता से कदम उठाने चाहिए। उन्होंने अपनी मांगों के समर्थन में जमकर नारेबाजी की और प्रशासन के माध्यम से संबंधित अधिकारियों तक अपनी बात पहुंचाई। कांग्रेस नेताओं ने कहा कि जब तक उनकी मांगों पर सकारात्मक कार्रवाई नहीं होती, तब तक पार्टी कार्यकर्ता लोकतांत्रिक तरीके से अपना विरोध जारी रखेंगे। धरने के दौरान बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता मौजूद रहे।



**झाँसी जयसु।** आज वार्ड-45 सुभाष गंज बाजार में व्यापारियों की नगर निगम से संबंधित विभिन्न समस्याओं के समाधान हेतु नगर निगम

## कृषि विश्वविद्यालय के परास्नातक छात्र खेती में ला रहे हैं नये शोध आयाम

■ नौ छात्रों से सौ शोध छात्रों तक का ऐतिहासिक कीर्तिमान

■ अब 2027 से लगभग 300 परास्नातक छात्र जमा करेंगे शोध प्रबंध

**झाँसी जयसु।** रानी लक्ष्मी बाई केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय के छात्रों की शोध मेधा अब देश के कृषि परिदृश्य को बदलने के लिए पूरी तरह तैयार है। विश्वविद्यालय के लगभग सौ परास्नातक-मास्टर्स और पीएचडी छात्रों के शोध प्रबंधों के परिणाम अब नये आयामों के प्रोत्साहन का मजबूत आधार बनेंगे। विश्वविद्यालय के लिए यह सफर बेहद गौरवशाली और प्रेरणादायी रहा है।

वर्ष 2019-20 में महज नौ (परास्नातक छात्रों के साथ शुरू हुआ यह सफर आज वर्ष 2025-26 में लगभग सौ उच्च शिक्षण डिग्री धारक शोधार्थियों तक पहुँच चुका है। विश्वविद्यालय के इस शैक्षणिक और अनुसंधान विस्तार में कृषि, उद्यानिकी, वानिकी, मत्स्य पालन और पशुचिकित्सा विज्ञान जैसे विविध संकायों के छात्रों एवं उनके मार्गदर्शकों ने अपनी उत्कृष्ट शोध क्षमता का परिचय दिया है। उन्होंने अपनी लगन और मेधा के दम पर प्रयोगशाला से लेकर किसानों के खेतों

तक की शोध यात्रा को बेहद आशाजनक रूप से आगे बढ़ाया है। इनका यह अनुसंधान न केवल पारंपरिक खेती की चुनौतियों को दूर कर रहा है, बल्कि आधुनिक कृषि तकनीकों, फसल विविधीकरण और पशुधन प्रबंधन में नए प्रतिमान भी स्थापित कर रहा है। छात्रों के ये व्यावहारिक शोध परिणाम आने वाले समय में बुंदेलखंड सहित पूरे देश के किसानों की आय बढ़ाने और कृषि क्षेत्र को आत्मनिर्भर बनाने में मील का पथर साबित होंगे।

पोस्टग्रेजुएट छात्रों द्वारा शोध में आधुनिक तकनीकों का समावेश करने से उच्च शिक्षा और अनुसंधान के स्तर में गुणात्मक सुधार हुये है। छात्रों ने अपने शोध में बायोटेक्नोलॉजी, नैनोटेक्नोलॉजी, जियोस्पेशियल टेक्नोलॉजी एवं डिजिटल कृषि जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, ड्रोन और इंटरनेट ऑफ थिंग्स जैसी तकनीकों का कृषि शोध में प्रयोग किया है। इन

आधुनिक शोधों से न केवल अकादमिक जगत को बल्कि समाज और किसानों को भी सीधा लाभ मिलेगा। इसके साथ राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय रिसर्च जर्नल्स में शोध पत्रों के प्रकाशित होने से विश्वविद्यालय और देश का गौरव बढ़ेगा। इसके साथ पेटेंट मिलने से देश में तकनीकी आत्मनिर्भरता और इनोवेशन (नवाचार) को बढ़ावा मिलेगा। पेंकेज ऑफ प्रैक्टिस एवं टेक्नोलॉजी बनने से किसानों के लिए खेती की नई और वैज्ञानिक गाइडलाइंस तैयार होंगी, जिससे फसलों की लागत घटेगी और पैदावार बढ़ेगी।

**वास्तविक समस्याओं के समाधान खोजे**

हमारे छात्रों ने विज्ञान और आधुनिक तकनीकों के उपयोग द्वारा समाज और कृषि क्षेत्र की वास्तविक समस्याओं के समाधान खोजे हैं। शोध प्रबंधों का यह शतक विश्वविद्यालय के इतिहास में एक

## सुभाष गंज की समस्याओं के समाधान के लिये नगर निगम अधिकारियों ने किया निरीक्षण



**झाँसी जयसु।** आज वार्ड-45 सुभाष गंज बाजार में व्यापारियों की नगर निगम से संबंधित विभिन्न समस्याओं के समाधान हेतु नगर निगम

आवश्यक कार्रवाई का आश्वासन दिया। निरीक्षण में नगर निगम के चीफ इंजीनियर राजवीर सिंह जी, अधिशासी अभियंता श्रीमती नीना सिंह जी, सहायक अभियंता बिपिन कुमार एवं अवर अभियंता श्रमोहित गर्ग जी उपस्थित रहे।इस अवसर पर सुभाष गंज व्यापार मंडल के अध्यक्ष अरुण राय जी, खुराना, क्षेत्रीय पार्थद पंकज

राय सहित व्यापारीगण उपस्थित रहे और उन्होंने बाजार की विभिन्न समस्याओं से नगर निगम अधिकारियों को अवगत कराया। निरीक्षण के दौरान अधिकारियों द्वारा व्यापारियों को आश्वासन दिया गया कि बिजलीघर के पीछे स्थित नाले का निर्माण कार्य कराया जाएगा। साथ ही सुभाष गंज बाजार की समस्त सड़कों की एपेक्स/खमरीकरण द्वारा मरम्मत एवं सुधार कराने की कार्रवाई की जाएगी, जिससे व्यापारियों एवं आम नागरिकों को आवागमन में सुविधा मिल सके। व्यापारियों ने नगर निगम अधिकारियों का मौके पर पहुंचकर समस्याओं को सुनने तथा उनके समाधान के लिए कार्रवाई किए जाने पर आभार व्यक्त किया।

**झाँसी जयसु।** अज्ञात बदमाशों ने सूने मकान को निशाना बनाकर सोने चांदी के जेवरता व कैश चोरी कर लिया। इसकी सूचना पुलिस को दी गई।

कटेरा थाना क्षेत्र के ग्राम मगरवारा निवासी नीलेश अहिरवार ने पुलिस को सूचना देते हुए बताया कि वह निजी ठेकेदार हैं। वे काम के सिलसिले में अपनी पत्नी के साथ झांसी में रहते हैं। उनके गांव वाले मकान में पिता भरोसे अहिरवार रहते थे। बीते रोज उनके पिता भी कुछ मजदूरों के साथ झांसी चले

## ठेकेदार के घर से लाखों के जेवर व कैश चोरी

गए थे। इसके बाद मकान सूना पड़ा था। चोरों ने इसी दौरान मौका पाकर मकान के गेटों की कुंडी उखाड़कर प्रवेश किया। उन्होंने कमरों में रखी अलमारी और अन्य सामान खंगाला। चोर गुल्लक तोड़कर उसमें रखे रुपये और एक बक्सा भी अपने साथ ले गए। परिवार आज गांव वापस पहुंचा तो घर के ताले टूटे और सामान बिखरा मिला। पुलिस का कहना है कि सीसीटीवी फुटेज और पूरी जांच से ही स्थिति साफ हो सकेगी।

# ऑपरेशन कन्विक्शन : 74 मुकदमों में 130 लोगों को सजा सेवा संकल्प अभियान 2026, पौधारोपण अभियान आयोजित

**झाँसी जयसु।** ऑपरेशन कन्विक्शन अभियान के तहत जिले की मनीटीरिंग सेल पुलिस ने विभिन्न न्यायालयों में विचाराधीन मामलों में पैरवी कर अपराधियों को सजा दिलाई है। सितंबर माह में 74 मुकदमों में 130 लोगों को सजा सुनाई गई। इसमें पाँचवो व बलात्कार के मामलों में छह अभियुक्तों, दहेज हत्या के मामले में सात, लूट के मामले में दो, मादक पदार्थ के मामले में एक, गैंगस्टर में एक, सनसनी खेज में दो और अन्य 111 अभियुक्त शामिल है। ऑपरेशन कन्विक्शन के तहत अभियुक्तों को सजा कराने के लिए पुलिस व अभियोजन की ओर से मजबूत पैरवी की जा रही है।

जघन्य और महिला अपराधों के साथ अन्य अपराधों पर प्रभावी कार्रवाई करने के बाद उन्हें न्यायालय में दोषी सिद्ध करने तक पुलिस की सक्रिय भूमिका रहती है। पुलिस द्वारा न्यायालय में की गई पैरवी से सरकार का ऑपरेशन कन्विक्शन अभियान

कारगर साबित हो रहा है। क्योंकि जनपद में इस अभियान के तहत सितंबर 2026 में 74 मुकदमों में से 130 अभियुक्तों को सजा दिलाई गई। इस अवधि में किसी भी मामले में मृत्यु दंड की सजा नहीं दी गई। इस अभियान की सफलता में पुलिस तीन नए आपराधिक कानून को भी एक कुंजी मान रहे हैं, जिसमें भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता के अंतर्गत समय रहते कार्रवाई होती है। प्रदेश सरकार की ओर से जून 2025 से ऑपरेशन कन्विक्शन की शुरुआत की गई थी, जिसमें पुलिस ने सशक्त विवेचना, समयबद्ध चार्जशीट और न्यायालय में प्रभावी पैरवी के जरिए अपराधों के खिलाफ निर्णायक बढ़त बनाना है। वर्ष 2026 के नवें माह सितम्बर में 74 मामलों में सजा सुनाई गई, जिनमें 130 अभियुक्त दोषसिद्ध हुए हैं। यह अभियान पुलिस महानिदेशक द्वारा न्यायालयों में लंबित मुकदमों का शीघ्र निस्तारण सुनिश्चित करने

के उद्देश्य से चलाया जा रहा है। इसका लक्ष्य प्रभावी पैरवी के माध्यम से दोषियों को सजा दिलाना है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक विकास कुमार के कुशल निदेशन में यह उपलब्धि हासिल की गई। इसमें मॉनिटरिंग सेल, अभियोजन शाखा, कोर्ट मोहर्रर, कोर्ट पैरोकार, विशेष लोक अभियोजक, सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता, अभियोजन अधिकारी और सहायक अभियोजन अधिकारी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन सभी के समन्वित प्रयासों और प्रभावी पैरवी के परिणामस्वरूप, अगस्त 2026 में न्यायालयों में विचाराधीन 74 अभियोगों में 130 अभियुक्तों को सजा सुनाई गई। बताते हैं कि जनवरी माह में 79 मामलों में से 78, फरवरी माह में 55 मामलों में से 49, मार्च माह में 47 मामलों में से 46, अप्रैल माह में 32 मामलों में से 28, मई माह में 48 मामलों में से 46, जून माह में 34 मामलों में से 56, जुलाई माह में 53 मामलों में से

68, अगस्त माह में 55 मामलों में से 68 अभियुक्तों, सितंबर माह में 74 मामलों में से 130 अभियुक्तों को सजा दिलाई गई है।

**यह टीम है मॉनीटरिंग सेल**

पुलिस अधीक्षक ग्रामीण/ नोडल अधिकारी अरविन्द कुमार, निरीक्षक चंद्रशेखर दुबे, उपनिरीक्षक सवेन्द्र सिंह, पर्वत सिंह, महिला आरक्षी कुसुम पटेल, दीपिका उपाध्याय व नेहा सचान शामिल है।

**इनका कहना है**

ऑपरेशन कन्विक्शन अभियान के अंतर्गत जैसे ही भारतीय न्याय संहिता के साथ-साथ पुलिस की जांच और कानूनी प्रक्रिया के लिए भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता लागू हुई है। उसे पुलिस की कार्यप्रणाली में भी तेजी आई है। न्यायालय में भी बेहतर पैरवी हो रही है। जिसके चलते हम प्रत्येक वर्ष दोषियों को सजा दिलाने में सफल रहे हैं। विकास कुमार, एसएसपी झांसी

**झाँसी जयसुं।** बुन्देलखण्ड महाविद्यालय, में सेवा संकल्प अभियान 2026 के अंतर्गत च्सेवा मेरा योगदानज विषय पर पौधारोपण अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्र-छात्राओं एवं महाविद्यालय परिवार में पर्यावरण संरक्षण, प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता तथा समाज के प्रति सेवा भाव को विकसित करना है। कार्यक्रम के दौरान एनएसएस/ उन्नत भारत के वालंटियर एवं अन्य पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं ने महाविद्यालय परिसर में विभिन्न प्रकार के पौधों का रोपण किया। छात्र-छात्राओं, एनएसएस स्वयंसेवकों एवं महाविद्यालय के शिक्षकों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए पौधों के संरक्षण एवं

संवर्धन का संकल्प लिया कार्यक्रम में इस बात पर विशेष बल दिया गया कि केवल पौधारोपण करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि लगाए गए पौधों की नियमित देखभाल एवं सुरक्षा भी प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है। इस अवसर पर प्राचार्य प्रो.एस.के. राय एवं प्रो.एल. सी. साहू ने कहा



सर्वधन का संकल्प लिया कार्यक्रम में इस बात पर विशेष बल दिया गया कि केवल पौधारोपण करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि लगाए गए पौधों की नियमित देखभाल एवं सुरक्षा भी प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है। इस अवसर पर प्राचार्य प्रो.एस.के. राय एवं प्रो.एल. सी. साहू ने कहा

कि च्सेवा संकल्प अभियान हमें यह प्रेरणा देता है कि समाज और राष्ट्र के प्रति हमारा योगदान केवल किसी विशेष अवसर तक सीमित न रहे। एक पौधा लगाना पर्यावरण के प्रति हमारी जिम्मेदारी का छोटा लेकिन प्रभावशाली कदम है। प्रत्येक छात्र को प्रकृति संरक्षण को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा

बनाना चाहिए। छात्रों की सक्रिय भागीदारी इस अभियान को और अधिक सार्थक बनाती है। इस अवसर पर एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी डॉ.रामनारायण, डॉक्टर नागेंद्र कुमार सिंह, डॉ. संजीव शेखर सिंह, डॉक्टर आकाश दुबे आदि शिक्षक गण एवं समस्त छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।



## इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस के 25 साल पूरे

**नोएडा,** (एजेंसियां)। फाइनेंशियल टाइम्स ग्लोबल एमबीए रैंकिंग्स 2026 में भारत में पहले और दुनिया में 12वें स्थान पर रहे इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस (आईएसबी) ने अपनी 25वीं वर्षगांठ मनाई। इस मौके पर आईएसबी@25 के तहत कई दीर्घकालीन पहलों की घोषणा की गई। इन पहलों का उद्देश्य मैनेजमेंट शिक्षा को अधिक से अधिक छात्रों तक पहुंचाना और भारत में रिसर्च और शिक्षण क्षमता को मजबूत करना है। आईएसबी 25 स्कॉलर्स प्रोग्राम के तहत आईएसबी हर साल 250 स्कॉलरशिप देगा। ये स्कॉलरशिप आईएसबी के प्रमुख पोस्ट ग्रेजुएट प्रोग्राम इन मैनेजमेंट (पीजीपी) और पीजीपी इन मैनेजमेंट फॉर यंग लीडर्स (पीजीपी वार्डएल) कोर्स के लिए दी जाएंगी। स्कॉलरशिप छात्रों की योग्यता और आर्थिक जरूरत के आधार पर दी जाएंगी। इसके तहत छात्रों को फीस में 100%, 50%, 30% और 25% तक की छूट मिलेगी। इसके साथ ही आईएसबी इंडिया रिसर्च कॉमन्स नाम से राष्ट्रीय स्तर का रिसर्च प्लेटफॉर्म शुरू करेगा। इसके माध्यम से देशभर के स्कॉलर्स को चुनिंदा डेटा सेट, रिसर्च टूल्स, रिसर्च मेथडोलॉजी से जुड़े संसाधन और एआई आधारित रिसर्च सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस के डीन प्रोफेसर मदन पिल्लुतला ने कहा, आईएसबी25 सिर्फ हमारे 25 साल के सफर का जश्न मनाने का मौका नहीं है, बल्कि यह भविष्य के लिए हमारी प्रतिबद्धता तय करने का अवसर भी है। बेहतर शिक्षा को अधिक से अधिक छात्रों तक पहुंचाना, ज्ञान को अधिक लोगों के साथ साझा करना और देशभर की संस्थाओं और स्कॉलर्स के लिए रिसर्च को अधिक उपयोगी बनाना हमारा लक्ष्य है। इन नई योजनाओं के माध्यम से आईएसबी ने पिछले कुछ वर्षों में छात्रों और उद्योग क्षेत्र की बदलती जरूरतों को ध्यान में रखते हुए शुरू की गई विभिन्न पहलों को आगे बढ़ाया है। 2025 में आईएसबी ने पोस्ट ग्रेजुएट प्रोग्राम इन मैनेजमेंट फॉर यंग लीडर्स नाम से नया कोर्स शुरू किया। इस कोर्स के पहले बैच में 130 छात्रों को प्रवेश दिया गया। इनमें से एक-तिहाई से अधिक छात्रों को फीस में छूट दी गई।

## थायराइड व पाचन को सुधारने में असरदार होता है मत्स्यासन

**नई दिल्ली,** (एजेंसियां)। व्यस्त दिनचर्या में काम का बढ़ता दबाव, घंटों कुर्सी पर बैठने की आदत और खराब शारीरिक मुद्रा रीढ़ की हड्डी और श्वास तंत्र पर बुरा असर डालते हैं। ऐसे ही हठयोग का 'मत्स्यासन' एक प्रभावी समाधान के रूप में काम करता है। यह आसन छाती को खोलकर फेफड़ों की ऑक्सीजन ग्रहण क्षमता को बढ़ाता है और गर्दन तथा कंधों की मांसपेशियों के तनाव को दूर करता है।

‘मत्स्य’ का अर्थ है- ‘मछली’। इस आसन को करने के दौरान शरीर की मुद्रा मछली जैसा बनती है। इसलिए, इसे मत्स्यासन कहा जाता है। यह आसन छाती को चौड़ाकर उसे स्वस्थ बनाए रखने में सक्षम है। प्लाविनी प्राणायाम के साथ इस आसन की स्थिति में लंबे समय तक पानी में तैर सकते हैं। आयुष मंत्रालय के अनुसार, मत्स्यासन (फिश पोज) एक महत्वपूर्ण योग मुद्रा है, जो श्वासन तंत्र को मजबूत बनाने, रीढ़ की हड्डी में लचीलापन



- मन को शांत करने में कारगर**
- चिंता व डर जैसी भावनाओं को कम करने में मदद**

लाने और तनाव कम करने में बेहद असरदार है। थायराइड ग्रंथि को सक्रिय करने और पाचन तंत्र को सुदृढ़ बनाने के कारण इसे शारीरिक पुनरुद्धार के लिए सर्वश्रेष्ठ आसनों में गिना जाता है। इस आसन को करने से पेट की मांसपेशियां और पाचन तंत्र में बेहतर सुधार होता है, जिससे कब्ज से राहत मिलती है।

## विविध

## गोक्षुरा व चंद्रशूरा के सुरक्षित इस्तेमाल पर जोर

**नई दिल्ली,** (एजेंसियां)। भारत की पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों में औषधीय पौधों का महत्व सदियों से रहा है। आयुर्वेद, सिद्ध और यूनानी जैसी प्रणालियों में इन पौधों का इस्तेमाल स्वास्थ्य को बेहतर बनाए रखने के लिए किया जाता है। ऐसे ही दो महत्वपूर्ण पौधे हैं गोक्षुरा और चंद्रशूरा।

चंद्रशूरा को लेपिडियम सैटिवम के नाम से जाना जाता है। ये अपने पोषण और सेहत से भरपूर गुणों के लिए प्रसिद्ध है। आयुर्वेद में इसे पाचन सुधारने, शरीर को बल देने और समग्र ऊर्जा बढ़ाने वाली औषधि के रूप में इस्तेमाल किया जाता रहा है। यह एक सामान्य रूप से इस्तेमाल होने वाला पौष्टिक पौधा है।

दूसरी ओर गोक्षुरा, जिसे ट्रिबुलस टेरेस्ट्रिस भी कहा जाता है, पारंपरिक चिकित्सा में एक खास स्थान रखता है। इसके इस्तेमाल का इतिहास बहुत पुराना है और पिछले कुछ वर्षों में दुनियाभर में इसके प्रति लोगों की दिलचस्पी काफी बढ़ी है। इसी वजह से वैज्ञानिक और शोध समुदाय भी अब इसके पारंपरिक



- पोषण और सेहत से भरपूर गुणों के लिए प्रसिद्ध**
- कमेटो सबूतों पर आधारित तकनीकी रिपोर्ट करेगी तैयार**

उपयोगों को आधुनिक विज्ञान की कसौटी पर समझने की कोशिश कर रहा है। आज जब दुनियाभर में हर्बल और आयुर्वेदिक उत्पादों का चलन बढ़ रहा है, तो इनकी गुणवत्ता, प्रभाव और सुरक्षा से जुड़े सवाल भी उठ रहे हैं। उपभोक्ताओं के भरोसे और सुरक्षित इस्तेमाल के लिए जरूरी है कि इन पौधों पर ठोस वैज्ञानिक प्रमाण उपलब्ध हों। इसी जरूरत को ध्यान में रखते हुए आयुष मंत्रालय ने एक बड़ा फैसला लिया है।

फेफड़ें खुलते हैं, जिससे सांस लेने में आसानी होती है और सांस संबंधित समस्याएं ज्यादा परेशान नहीं करती। इसके अलावा, यह आसन पीठ की ऊपरी मांसपेशियों को भी आराम देता है और रीढ़ की हड्डी को लचीला बनाता है। जो लोग पीठ दर्द से परेशान हैं, उनके लिए यह आसन वरदान की तरह है।

मत्स्यासन न सिर्फ शारीरिक सेहत के लिए बल्कि मानसिक शांति के लिए भी बेहद फायदेमंद होता है। जब आप इस आसन को करते हैं, तो गहरी सांस लेते हुए एक खास मुद्रा में लेटना होता है, जिससे मन को शांति मिलती है और सोचने-समझने की क्षमता बेहतर होती है। ये आसन तनाव, चिंता और डर जैसी भावनाओं को कम करने में मदद करता है। यह मन को शांत करने में कारगर है। इसके अलावा, यह पेट की चर्बी घटाने के लिए भी असरदार माना जाता है। इस आसन से पेट की मांसपेशियों पर असर पड़ता है, जिससे पेट की चर्बी कम करने में मदद मिलती है।

### श्रीमद्भागवत कथा के दौरान रुक्मिणी हरण का प्रसंग सुनाया



**गाजियाबाद,** (एजेंसियां)। छोड़ा कॉलोनी प्रशांत गार्डन स्थित श्रीमद्भागवत कथा के पांचवे दिन आचार्य निरंजन जी महाराज ने रुक्मिणी हरण की कथा के मार्मिक प्रसंग की चर्चा की गई। शिशुपाल के साथ विवाह का समय निश्चित होने के बाद माता रुक्मिणी ने एक विश्वसनीय और वृद्ध ब्राह्मणदेव 'शतानन्द' के माध्यम से भगवान श्री कृष्ण को अपना गुप्त प्रेम संदेश (पत्र) भेजा था। श्रीमद्भागवत महापुराण के अनुसार रुक्मिणी जी ने एक अत्यंत

निष्ठावान पूज्य ब्राह्मण देव को दूत बनाकर द्वारका भेजा।

रुक्मिणी के भाई 'रुक्मी' ने उनका विवाह उनकी इच्छा के विरुद्ध जबरन चेदिराज शिशुपाल से तय कर दिया। शिशुपाल बारात लेकर विदर्भ नगरी कुंदिनपुर पहुंच चुका था विवाह से ठीक दो दिन पहले रुक्मिणी जी ने पत्र में लिखा कि विवाह के दिन रीति-रिवाजों के अनुसार वे नगर के बाहर गिरिजा माता (देवी अंबा) के मंदिर पूजा करने जाएंगी। उन्होंने श्री कृष्ण से प्रार्थना की कि वे वहीं आकर उनका



रामलीला को केवल धार्मिक आयोजन तक सीमित नहीं रखा गया है। मंचन के जरिए समाज से जुड़े ज़रूरी मुद्दों को भी लोगों तक पहुंचाने की तैयारी है। हर दिन रामलीला शुरू होने से पहले पर्यावरण संरक्षण से जुड़ा छोटा संदेश दिया जाएगा। इसके साथ ही नुकड़ नाटक के माध्यम से लोगों को सिंगल यूज प्लास्टिक से होने वाले नुकसान के बारे में बताया जाएगा। रामलीला के दौरान दर्शकों से अधिक से

### रामलीला के मंच पर रावण के साथ प्रदूषण पर भी होगा वार

## 6 वर्षीय आर्या का कमाल

**अटल सेतु से गेटवे ऑफ इंडिया तक 17 किमी तैरकर बनाया रिकॉर्ड**

**अमरावती,** (एजेंसियां)। आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा की रहने वाली महज छह वर्ष चार महीने और 20 दिन की आर्या नंकी थिनालुरी ने अरब सागर में 17 किलोमीटर की दूरी तैरकर पूरी करते हुए उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की है। आर्या ने अटल सेतु से मुंबई के गेटवे ऑफ इंडिया तक की दूरी तैरकर पूरी की। उनकी इस उपलब्धि की हर तरफ चर्चा हो रही है। आर्या ने अटल सेतु से गेटवे ऑफ इंडिया तक 17 किलोमीटर की दूरी महज 3 घंटे 51 मिनट में पूरी की। इतनी कम उम्र में अरब सागर की चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों का सामना करते हुए आर्या ने जिस हौसले, आत्मविश्वास और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया, उसकी सराहना की जा रही है। समुद्र में तैरना स्विमिंग पूल में तैरने की तुलना में अधिक चुनौतीपूर्ण माना जाता है। समुद्र की लहरों, पानी के बहाव और बदलती परिस्थितियों का सामना करते हुए आर्या ने लगातार तैरकर निर्धारित दूरी पूरी की। उनकी इस उपलब्धि के पीछे नियमित अभ्यास, अनुशासन और परिवार का निरंतर प्रोत्साहन महत्वपूर्ण माना जा रहा है। आर्या नंकी थिनालुरी ने कम उम्र में ही तैराकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल करते हुए तीन वर्ल्ड रिकॉर्ड अपने नाम दर्ज किए हैं। छह वर्ष की उम्र में समुद्र में चुनौतीपूर्ण तैराकी पूरी कर आर्या ने अपनी उपलब्धियों में एक और रिकॉर्ड जोड़ दिया है। इतनी कम उम्र में लंबी



दूरी की समुद्री तैराकी करने की उनकी क्षमता और इसके लिए किए गए कठिन अभ्यास के कारण आर्या का नाम तैराकी के क्षेत्र में चर्च में आया है। उनकी हर उपलब्धि के पीछे लगातार मेहनत और परिवार का सहयोग महत्वपूर्ण रहा है।

इस उल्लेखनीय उपलब्धि के बाद आर्या अपने परिवार के साथ शिरडी पहुंचीं और श्री साईबाबा के दर्शन किए। आर्या ने साईबाबा के चरणों में नतमस्तक होकर आशीर्वाद लिया। इस दौरान उनके साथ तैराकी की उपलब्धि के लिए उन्हें प्रदान की गई ट्रॉफी भी मौजूद थी। शिरडी में आर्या की इस अनोखी उपलब्धि की जानकारी सामने आने के बाद उनका उत्साहवर्धन और अभिनंदन किया गया। विजयवाड़ा की आर्या नंकी थिनालुरी ने बेहद कम उम्र में तैराकी के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाई है। तीन वर्ल्ड रिकॉर्ड और अब अरब सागर में 17 किलोमीटर की चुनौतीपूर्ण तैराकी पूरी करने के बाद तैराकी प्रेमियों की नजरें उनकी आगामी उपलब्धियों पर टिकी हैं।

## रामलीला के मंच पर रावण के साथ प्रदूषण पर भी होगा वार

**● रामलीला के मंच से घर-घर पहुंचेगा पालीथिन से दूरी और जल संरक्षण का संदेश**

अधिक पौधे लगाने और पानी की बर्बादी रोकने की अपील की जाएगी। पालीथिन मुक्त समाज बनाने के लिए लोगों को जागरूक किया जाएगा। आयोजकों का मानना है कि धार्मिक आयोजन में बड़ी संख्या में लोग शामिल होते हैं।

ऐसे में मंच से दिया गया सामाजिक संदेश अधिक से अधिक लोगों तक आसानी से पहुंच सकता है। इस अभियान में सोसायटी के बच्चों को भी जोड़ा गया है। बच्चों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का संदेश उनके परिवारों तक पहुंचाने की योजना है। ट्रस्ट की अध्यक्ष आरएस उण्पल ने बताया कि रामलीला महोत्सव को भव्य

## मां दुर्गा के आगमन व प्रस्थान का वाहन होगा हाथी



**नई दिल्ली,** (एजेंसियां)। शारदीय नवरात्र का इंतजार अब खत्म होने वाला है। मां दुर्गा की भक्ति और आराधना का यह पावन पर्व इस साल 11 अक्टूबर 2026, रविवार से शुरू होगा। नवरात्र के नौ दिनों में भक्त मां दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा-अर्चना करेंगे, व्रत रखेंगे और देवी से सुख-शांति व समृद्धि की कामना करेंगे। लेकिन नवरात्र की तारीखों और पूजा के अलावा देवी के आगमन और प्रस्थान के वाहन का भी विशेष महत्व है।

### वृंदावन से मथुरा बंद पड़े रेल मार्ग पर बनेगी फोरलेन सड़क, कार्ययोजना पर काम तेज

**मथुरा (एजेन्सियां)।** मथुरा-वृंदावन के बीच बंद हो चुकी रेल बस सेवा वाले मार्ग पर अब फोरलेन सड़क बनेगी। इसकी कार्ययोजना पर काम अब तेजी से आगे बढ़ रही है। अभी तक मथुरा से वृंदावन के लिए एक ही मार्ग होने से लोगों को जाम से जूझना पड़ता है बंद पड़े रेल मार्ग पर अब मथुरा से वृंदावन के लिए फोरलेन सड़क बनाई जाएगी

पर फोरलेन सड़क बनाने की योजना अब तेजी से आगे बढ़ रही है। प्रदेश सरकार की गंभीरता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि उत्तर प्रदेश शासन के संयुक्त सचिव सोमनाथ ने मंगलवार दोपहर लोक निर्माण विभाग अनुभाग-2 के प्रमुख अभियंता (विकास) एवं विभागाध्यक्ष को मेल भेजकर इसकी कार्ययोजना मंगलवार को ही मांगी है। मेल में इसे अति महत्वपूर्ण बताया हुए प्रत्येक दश में बांके बिहारी यानी वृंदावन की राह पर आवागमन आसान होने वाला है। बड़े पड़े मथुरा-वृंदावन रेल मार्ग है।

## चेयरमैन आरसी जैन के 85वें जन्मदिन पर रक्तदान शिविर, 159 यूनिट रक्त एकत्र

**नोएडा/जयपुर,** (एजेंसियां)। वेगा इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड और नित प्रो इंटरनेशनल की ओर से चेयरमैन आरसी जैन के 85वें जन्मदिन के अवसर पर सामाजिक सरोकार के तहत स्वैच्छिक रक्तदान शिविर आयोजित किए गए। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी 25 और 26 सितम्बर को नोएडा और जयपुर स्थित कंपनी की इकाइयों में रक्तदान शिविर आयोजित किए गए।

दो दिवसीय रक्तदान अभियान को कर्मचारियों का उत्साहजनक सहयोग मिला। कंपनी के कर्मचारियों ने स्वयं आगे बढ़कर रक्तदान किया और जरूरतमंद मरीजों की मदद के लिए अपना योगदान दिया।



**वेगा इंडस्ट्रीज और नित प्रो इंटरनेशनल की ओर से नोएडा और जयपुर इकाइयों में आयोजित हुआ स्वैच्छिक रक्तदान अभियान**

मानव संसाधन विभाग के सहायक उपाध्यक्ष सतेंद्र वशिष्ठ ने बताया कि कर्मचारियों ने सामाजिक जिम्मेदारी निभाते हुए अभियान में बढ़-चढ़कर भाग लिया। शिविर के दौरान कुल 159 यूनिट रक्त एकत्र किया गया। उन्होंने कहा कि रक्तदान जीवन बचाने वाला महत्वपूर्ण सामाजिक कार्य है। कर्मचारियों की संवेदनशीलता, सेवा भावना और सामाजिक

जिम्मेदारी के कारण अभियान सफल रहा।

इस अवसर पर रक्तदान करने वाले सभी कर्मचारियों, स्वयंसेवकों, चिकित्सा विशेषज्ञों और सहयोगी टीमों के प्रति आभार व्यक्त किया गया। कंपनी की ओर से सामाजिक सेवा और मानव कल्याण से जुड़े ऐसे अभियानों को आगे भी जारी रखने की भावना व्यक्त की गई।

## कुमाऊं में महिलाओं ने शुरू की रेशम धागे की कताई

**हल्द्वानी,** (एजेंसियां)। उत्तराखंड का रेशम विभाग अब रेशम कोया यानी कोकून उत्पादन तक सीमित न रहकर उससे धागा तैयार करने की दिशा में भी आगे बढ़ रहा है। कुमाऊं मंडल रेशम विभाग ने पहली बार महिला स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) के माध्यम से रेशम के धागे की कताई का काम शुरू कराया है। हल्द्वानी के राजकीय रेशम फार्म पनियाली में चल रही इस पहल का उद्देश्य महिलाओं को स्थानीय स्तर पर रोजगार और आय का साधन उपलब्ध कराने के साथ उत्तराखंड के रेशम को बाजार में नई पहचान दिलाना है।

इस पहल से तैयार होने वाले धागे की मार्केटिंग की जिम्मेदारी उत्तराखंड कोऑपरेटिव फेडरेशन के माध्यम से की जा रही है। इससे महिलाओं को पैयार उत्पाद बेचने के लिए अलग-अलग बाजारों में भटकने की जरूरत नहीं होगी। विभाग का प्रयास है कि महिलाओं को उनके श्रम का उचित मूल्य मिले और रेशम से जुड़े स्थानीय काम को व्यवस्थित बाजार उपलब्ध कराया जा सके।

रेशम विभाग (कुमाऊं मंडल) के उपनिदेशक हेमचंद्र ने बताया कि उत्तराखंड में पहली बार महिला स्वयं सहायता समूह को जोड़कर रेशम का धागा बनाने का काम शुरू किया गया है। यह कार्य हल्द्वानी के राजकीय



रेशम फार्म पनियाली में उनके कार्यालय के मार्गदर्शन में चल रहा है। उन्होंने बताया कि 'मां दुर्गा' न्यू रेशम स्वयं सहायता समूह' के नाम से महिलाओं का समूह बनाया गया है। फिलहाल 14 महिलाएं इससे जुड़ चुकी हैं और धागे की कताई कर आय अर्जित कर रही हैं। कम समय में समूह की महिलाओं को करीब 25 हजार रुपये की आय हो चुकी है। तैयार किए गए धागे की मार्केटिंग उत्तराखंड कोऑपरेटिव फेडरेशन, देहरादून के माध्यम से की जा रही है और फिलहाल करीब 4,500 रुपये प्रति किलो के हिसाब से मूल्य मिलना शुरू हुआ है। उन्होंने

आगे इसमें बढ़ोतरी की संभावना भी जताई। हेमचंद्र ने बताया कि महिलाओं को प्रशिक्षण देने में केंद्रीय रेशम बोर्ड के देहरादून सेंटर से भी सहयोग लिया गया। इस काम का विचार वर्ष 2019 का है, जब वे ऊधमसिंह नगर में तैनात थे। वर्ष 2025 से इसकी शुरुआत की गई और शुरुआत में एक-दो महिलाएं जुड़ी थीं। आय शुरू होने के बाद समूह में महिलाओं की संख्या बढ़कर 14 हो गई है। उन्होंने इसे उत्तराखंड के रेशम क्षेत्र में एक नया अध्याय बताया। स्वयं सहायता समूह की सदस्य विमल जीना ने बताया कि रेशम विभाग के उपनिदेशक हेमचंद्र के सहयोग से महिलाएं इस काम तक पहुंची हैं और अब रेशम का धागा तैयार कर रही हैं। समूह की सदस्य सुनीता ने भी विभाग के सहयोग को महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि रेशम से धागा तैयार करने के काम से महिलाओं को आय मिल रही है और उनके लिए स्वरोजगार का अवसर पैदा हुआ है। रेशम विभाग के वैज्ञानिक राहुल पाल ने बताया कि महिलाओं को धागा कताई के लिए पांच दिन का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। इसमें उत्तराखंड के वेस्ट

कोकून और टसर के माध्यम से धागा तैयार करने की प्रक्रिया सिखाई जा रही है। प्रशिक्षण में कोकून को उबालने की प्रक्रिया, उसको कताई, धागा तैयार करने के तरीके और गुणवत्ता से जुड़ी बारीकियां बताई जा रही हैं। महिलाओं को यह भी समझाया जा रहा है कि धागा तैयार करते समय कौन-कौन सी गलतियां हो सकती हैं और बेहतर गुणवत्ता का धागा कैसे बनाया जाए। राहुल पाल ने बताया कि तैयार धागे की बिक्री उत्तराखंड को-ऑपरेटिव फेडरेशन के शोरूम के माध्यम से की जा रही है। विभाग का प्रयास है कि महिलाएं अच्छी गुणवत्ता का धागा तैयार करें, जिससे बाजार में उसकी मांग बढ़े और उनकी आमदनी में भी इजाफा हो सके। इससे पहले हल्द्वानी क्षेत्र में रेशम विभाग की ओर से स्वयं सहायता समूहों को रेशम के कोयों से हस्तनिर्मित सजावटी सामान, ज्वेलरी और अन्य उत्पाद बनाने का प्रशिक्षण दिया गया था। कई महिलाएं इन उत्पादों के जरिए आय अर्जित कर आत्मनिर्भर बन चुकी हैं। अब विभाग की योजना रेशम धागा तैयार करने की इस पहल को भी बड़े स्तर पर विस्तार देने की है, ताकि दूर-दराज के ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं को घर के आरूपास रोजगार और आय का स्थायी साधन मिल सके।

**■ हाथी भारतीय परंपरा में शक्ति, स्थिरता, वैभव और समृद्धि का प्रतीक**

**■ अच्छी वर्षा और कृषि के लिए गी अनुकूल संकेत**

वजह है कि देवी का हाथी पर आगमन शुभ संकेत के तौर पर देखा जाता है। कुछ धार्मिक मान्यताओं में इसे अच्छी वर्षा और कृषि के लिए भी अनुकूल संकेत माना गया है।

## संपादक की कलम से

## मन की शांति और खुश रहने के सरल उपाय

खुशी एक बाहरी पुरस्कार नहीं, बल्कि भीतर उत्पन्न होने वाली अनुभूति है। हम अक्सर खुश होने को किसी विशेष उपलब्धि, चाह, वस्तु या परिस्थिति से जोड़ देते हैं। मगर वास्तविक अनुभव यह बताता है कि वे सारी चीजें अस्थायी संतोष देती हैं। उनके साथ अपेक्षाएं और चिंताएं भी जुड़ी होती हैं। जब अपेक्षाएं पूरी नहीं होतीं, तो वह सुख शीघ्र ही खो जाता है। सच्ची खुशी वह होती है, जिसे हम किसी बाहरी कारण के बिना भी महसूस कर सके। वह हमारे भीतर की गहराई में मौन होती है। इसे महसूस करना एक कला है, जिसका अभ्यास जीवन के छोटे-छोटे क्षणों में संतोष और पूर्णता लाता है। खुशी का अनुभव पाने का पहला कदम है सचेत रहना। हम अपने अधिकांश समय में या तो अतीत के विचारों में उलझे रहते हैं या भविष्य की चिंता में खोए रहते हैं। इसी भ्रम में वर्तमान का अनुभव खो जाता है। सचेत ध्यान हमें वर्तमान से जोड़ता है। जब हम सचेत होते हैं, तो छोटी-छोटी बातों, सुबह की हवा, चाय की चुस्की, किसी के चेहरे पर मुस्कान में भी खुशी मिलती है।

यह उस जागरूकता का परिणाम है, जो हमें बताती है कि सुख और शांति पहले से उपलब्ध हैं। जरूरत है, तो केवल देखने और स्वीकारने की। मनोविज्ञान और आधुनिक शोध दोनों बताते हैं कि नियमित रूप से आभार व्यक्त करने वाले लोग अधिक प्रसन्न और मानसिक रूप से स्वस्थ रहते हैं। आभार केवल सकारात्मक सोच नहीं है। यह यथार्थ की प्रशंसा करने का तरीका है, जिससे मन अधिक केंद्रित और खुश रहता है।

मानव होने का अर्थ ही सामाजिक जुड़ाव है। प्रेम, अपनापन और दोस्ती की गर्माहट दिल को तृप्त करती है। पर स्नेहपूर्ण संबंधों में खुशी तब स्थायी बनती है, जब वे पारदर्शी, सम्मानजनक और सहानुभूतिपूर्ण हों। सक्रिय रूप से सुनना, बिना निर्णय के ध्यान देना और छोटे कृत्यों से प्रेम जाहिर करना, मदद करना या समय देना रिश्तों को गहरा और स्थायी बनाता है। अकेलापन और सामाजिक असमर्थता आज के युग की बड़ी चुनौतियां हैं। इसलिए किसी समुदाय या परिवार के साथ वास्तविक जुड़ाव पैदा करना खुशी के अनुभव को मजबूत करता है।

लक्ष्य और अर्थ का अस्तित्व भी खुशी को गहरा करता है। केवल सुख-सुविधा की खोज अक्सर खालीपन छोड़ जाती है, लेकिन एक अर्थपूर्ण उद्देश्य है किसी काम से जुड़ना, जो हमारे मूल्यों के अनुरूप हो। यह उद्देश्य बड़ा भी हो सकता है और छोटा भी। किसी जरूरतमंद की मदद करना, किसी कला को सीखना, बच्चों को पढ़ाना या अपने क्षेत्र में सामाजिक कार्य करना- ये सब जीवन में अर्थ और संतुष्टि भरते हैं। जब व्यक्ति अपने कार्य में परिपूर्णता और कर्म का अनुभव करता है, तब खुशी बाहरी परिस्थितियों पर निर्भर नहीं रहती।

खुशी को महसूस करने का एक और सरल, लेकिन गहरा तरीका है अपने विचारों की निगरानी करना। नकारात्मक धारणा और आत्म-आलोचना अक्सर खुशी के स्रोतों को छिने लेती हैं। स्वयं के प्रति दयालु बनना चाहिए, जैसे हम किसी मित्र के साथ व्यवहार करते हैं, वैसे ही अपने साथ व्यवहार करने की जरूरत है। जब मन में नकारात्मक विचार आए, तो उन्हें पहचानना तथा सच्चे और संतुलित विचारों से बदलने का अभ्यास करना चाहिए। कला, संगीत और प्रकृति में डूब जाना भी खुशी को सीधे खोले रखता है। संगीत के सुर, कविता की भाषा, किसी चित्र के रंग या पेड़ों की छांव- ये तीनों मन को तात्कालिक आनंद और आराम देते हैं। इन अनुभवों में प्रवेश करने के लिए बड़ी तैयारी की जरूरत नहीं। कभी-कभी पांच मिनट का गीत सुनना या खिड़की खोलकर बाहर की हवा में सांस लेना ठीक उतना ही असरदार होता है, जितना कोई लंबा प्रवास।

प्रकृति के साथ संबंध विशेषकर हमारे भीतर के सामंजस्य को जगाता है और एक शांत आनंद देता है, जो घड़ी के टिक-टिक से परे होता है। वस्तुओं और उपलब्धियों का मोह कम करना भी खुशी की कुंजी है। जब हम अपनी आवश्यकताओं और इच्छाओं के बीच स्पष्ट अंतर कर लेते हैं, तभी असली संतोष संभव होता है। सरलता का जीवन अपनाने का अर्थ है समझदारी से चयन करना और उन चीजों को महत्त्व देना, जो सच्चा आनंद देती हैं। समय के साथ अनुकूलन का विचार भी समझना जरूरी है। मनुष्य की प्रवृत्ति है नए अनुभवों के साथ शीघ्र ही अस्थस्थ हो जाना। नया घर, नई कार और उन्नति शुरुआत में खुशी देते हैं, पर समय के साथ उनकी तीव्रता घट जाती है। इस चक्र को तोड़ना है, तो हमें अपनी चेतना और वैचारिक नवाचार को बनाए रखना होगा। इसलिए छोटे-छोटे उत्सव, नियमित विराम और स्वयं को नए नजरिए से देखने की आदत खुशी को ताजा रखती है। आखिर खुशी का अनुभव व्यक्तिगत अभ्यास का विषय है। यह सिर्फ भावना नहीं, बल्कि कौशल भी है, जिसे हम सीख सकते हैं और मजबूत कर सकते हैं।

दिन की शुरुआत हम एक धन्यवाद के विचार से कर सकते हैं। दोपहर में पांच मिनट गहरी और लयात्मक सांस ली जा सकती है। शाम को किसी प्रियजन से एक सच्ची बातचीत करनी चाहिए। इन छोटे-छोटे अभ्यासों का जोड़ अक्सर जीवन में बड़ा अंतर लाता है। जब हम समझते हैं कि खुशी एक क्षणभंगुर उपहार नहीं, बल्कि निर्विकल्प रूप से हमारे भीतर शासन करने वाली स्थिति है, तब जीवन के उभार-झराव के बीच भी हम एक स्थिर अलगाव का पता लगा लेते हैं। यह आनंद किसी भी मौसम में खिल उठता है-कठिनाइयों में धैर्य बनकर, सफलता में नम्रता बनकर और रिश्तों में स्नेह बनकर। इसलिए खुश रहना किसी गंतव्य की अपेक्षा नहीं, बल्कि प्रत्येक दिन की चुनी हुई प्रवृत्ति होनी चाहिए।



महेन्द्र तिवारी

**इस भयानक घटना के केंद्र में जो युवा फंसा है, उसका नाम अनोचन शिवरासा है। कई लोग भ्रामक जानकारीयों और अफवाहों के कारण उसे भारतीय नागरिक मान रहे हैं, परंतु वास्तविकता यह है कि वह मूल रूप से श्रीलंका के पूर्वी प्रांत स्थित कलमुनई क्षेत्र का निवासी है। वह एक तमिल हिंदू है, जो अपने परिवार के गिरते आर्थिक हालात सुधारने और बेहतर भविष्य की तलाश में सितंबर 2025 में रोजगार के लिए सउदी अरब गया था। विकासशील देशों से मध्य पूर्व के संपन्न देशों में जाने वाले लाखों युवाओं की तरह अनोचन के भी कुछ बहुत ही साधारण सपने थे। वह अपनी कड़ी मेहनत से धन अर्जित कर अपने माता पिता को एक सुखद और सुरक्षित जीवन देना चाहता था। परंतु, उसे इस बात का तनिक भी आभास नहीं था कि एक दिन उसकी उंगलियों से किया गया एक छोटा सा कृत्य उसे ऐसे अंधकार में धकेल देगा।**

आज के तकनीकी युग में संचार के साधन जितने सुलभ हुए हैं, वे कई बार उतने ही घातक भी सिद्ध हो सकते हैं। आभासी दुनिया या अंतर्जाल पर व्यक्त किए गए विचार कब किसी व्यक्ति के जीवन का सबसे बड़ा संकट बन जाएं, यह कहना अत्यंत कठिन है। हाल ही में सउदी अरब से एक ऐसा ही अत्यंत संवेदनशील और हृदयविदारक मामला सामने आया है, जिसने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मानवाधिकार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और विदेशी धरती पर प्रवासी कामगारों की सुरक्षा पर एक गंभीर बहस को जन्म दे दिया है। यह मामला एक 24 वर्षीय युवा का है, जिसे एक आभासी मंच पर की गई एक मात्र टिप्पणी के कारण सउदी अरब की न्यायपालिका द्वारा मृत्युदंड की सजा सुनाई गई है। यह घटना न केवल दो देशों के बीच कूटनीतिक चुनौती बन गई है, बल्कि आम जनमानस में भी न्याय और क़रूरता के बीच की महीन रेखा को लेकर कई बड़े प्रश्न खड़े कर रही है।

इस भयानक घटना के केंद्र में जो युवा फंसा है, उसका नाम अनोचन शिवरासा है। कई लोग भ्रामक जानकारीयों और अफवाहों के कारण उसे भारतीय नागरिक मान रहे हैं, परंतु वास्तविकता यह है कि वह मूल रूप से श्रीलंका के पूर्वी प्रांत स्थित कलमुनई क्षेत्र का निवासी है। वह एक तमिल हिंदू है, जो अपने परिवार के गिरते आर्थिक हालात सुधारने और बेहतर भविष्य की तलाश में सितंबर 2025 में रोजगार के लिए सउदी अरब गया था। विकासशील देशों से मध्य पूर्व के संपन्न देशों में जाने वाले लाखों युवाओं की तरह अनोचन के भी कुछ बहुत ही साधारण सपने थे। वह अपनी कड़ी मेहनत से धन अर्जित कर अपने माता पिता को एक सुखद और सुरक्षित जीवन देना चाहता था। परंतु, उसे इस बात का तनिक भी आभास नहीं था कि एक दिन उसकी उंगलियों से किया गया एक छोटा सा कृत्य उसे ऐसे अंधकार में धकेल देगा।

विवाद की जुड़ सार्वजनिक संचार मंच पर साड़ा किया गया एक चलचित्र था। यह चलचित्र श्रीलंका की किसी प्रसिद्ध हिंदू तीर्थयात्रा और उससे जुड़ी आस्थाओं से संबंधित था। इस चलचित्र पर किसी अज्ञात व्यक्ति ने दुर्भावना से ग्रसित होकर भगवान शिव को लेकर अत्यंत आपत्तिजनक और अपमानजनक टिप्पणी कर दी थी। अपनी धार्मिक भावनाओं को आहत होता देख अनोचन स्वयं को शांत नहीं रख पाया और उसने तमिल भाषा में उस टिप्पणी का अत्यंत कड़ा उत्तर दिया। यह एक सामान्य मानवीय प्रतिक्रिया थी, जहां एक व्यक्ति अपने आराध्य के घोर अपमान का प्रतिकार कर रहा था। लेकिन सउदी अरब जैसे देश में, जहां इस्लामी कानून या शरिया का अत्यंत कठोरता से पालन किया जाता है, वहां की व्यवस्था ने इस स्वाभाविक प्रतिक्रिया को एक भिन्न और हिंसक दृष्टिकोण से देखा। सउदी अधिकारियों ने अनोचन को उस जवाबी टिप्पणी को इस्लाम और उनके पैगंबर के अपमान के रूप में व्याख्याित किया।

सउदी अरब के कानूनों के अंतर्गत इसे ईशनिंदा का गंभीर अपराध मान लिया गया। जब अनोचन को अन्य लोगों के माध्यम से इस बात का भान हुआ कि उसकी टिप्पणी से भारी विवाद उत्पन्न हो सकता है और स्थानीय कानूनों

के अनुसार यह एक अक्षम्य अपराध माना जा सकता है, तो उसने त्वरित कार्रवाई करते हुए अपनी टिप्पणी को तुरंत हटा दिया। उसने अपनी भूल स्वीकार करते हुए एक माफीनामा भी अभिलेखित किया और उसे उसी आभासी मंच पर प्रसारित किया। इस माफीनामे में उसने अत्यंत स्पष्ट शब्दों में कहा कि उसका उद्देश्य किसी भी धर्म या आस्था को ठेस पहुंचाना नहीं था और वह अज्ञानतावश की गई अपनी टिप्पणी के लिए क्षमाप्रार्थी है। एक सभ्य समाज में भूल सुधारने और खुले मन से क्षमा मांगने के बाद प्राय: विवाद समाप्त हो जाते हैं, लेकिन आभासी दुनिया की सबसे बड़ी क़रूरता यह है कि यहां कुछ भी हमेशा के लिए नहीं मिटता।

टिप्पणी हटाए जाने से पूर्व ही किसी अज्ञात व्यक्ति ने उस दृश्य पटल की प्रतिलिपि सहेज ली थी। उस व्यक्ति ने अत्यंत दुर्भावनापूर्ण तरीके से वह चित्र अनोचन की रोजगार प्रदाता कंपनी और सउदी अरब के संबंधित सुरक्षा अधिकारियों को विद्युतीय संदेश के माध्यम से भेज दिया। इस शिकायत के आधार पर 2 जुलाई 2026 को अनोचन को उसके कार्यस्थल से ही गिरफ्तार कर लिया गया। उसके सभी संचार उपकरण जब्त कर लिए गए और उसे सीधे कारावास में डाल दिया गया। एक बिल्कुल अनजान देश में, जहां की स्थानीय भाषा और कठोर न्याय प्रणाली से वह पूरी तरह अनभिज्ञ था, उसके लिए यह स्थिति किसी भयानक दु:स्वप्न से कम नहीं थी। प्रारंभ में वहां की एक निचली अदालत ने पूरे मामले की सुनवाई करते हुए अनोचन को 5 वर्ष के कठोर कारावास और 30 लाख रियाल के भारी आर्थिक दंड की सजा सुनाई।

एक गरीब प्रवासी मजदूर के लिए 30 लाख रियाल की विशाल राशि चुकाना सर्वथा असंभव था, फिर भी यह सजा जीवन समाप्त होने से कहीं बेहतर थी। लेकिन इस पूरे मामले का सबसे दुखद और चौंकाने वाला पहलू तब सामने आया जब इस फैसले के खिलाफ ऊपरी अदालत में अपील की गई। 17 सितंबर 2026 को उच्च न्यायालय में हुई सुनवाई के दौरान अदालत ने किसी भी प्रकार की दया या मानवीय दृष्टिकोण दिखाने के बजाय निचली अदालत की सजा को और भी अधिक कठोर बनाते हुए उसे सीधे मृत्युदंड में परिवर्तित कर दिया। इस कठोर फैसले के सार्वजनिक होते ही पूरे दक्षिण एशिया, विशेषकर भारत और श्रीलंका में भारी आक्रोश और गहरी चिंता की लहर दौड़ गई। अनोचन के तमिल होने और हिंदू धर्म से जुड़े होने के कारण भारत के लाखों लोगों ने उसे अपना ही देशवासी समझ लिया और सहायता की गुहार लगाने लगे।

भारत में विभिन्न आभासी संचार मंचों पर आम नागरिकों से लेकर सामाजिक कार्यकर्ताओं तक ने भारत सरकार और विदेश मंत्रालय से इस मामले में त्वरित हस्तक्षेप करने की मांग शुरू कर दी। लोग यह मांग करने लगे कि भारत अपनी कूटनीतिक शक्ति का प्रयोग कर उस बेगुनाह हिंदू युवक को बचाए। यह सारी भावना सांस्कृतिक और धार्मिक जुड़ाव का ही परिणाम थी। यद्यपि, अंतरराष्ट्रीय कानूनों और संप्रभुता के नियमों के अनुसार अनोचन पूर्ण रूप से श्रीलंका का नागरिक है, इसलिए भारत सरकार सीधे तौर पर इस कूटनीतिक मामले में कोई

वैधानिक कार्यवाही करने का अधिकार नहीं रखती। किसी दूसरे संप्रभु देश के नागरिक के मामले में किसी तीसरे देश का सीधा हस्तक्षेप अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अत्यंत जटिल और लगभग असंभव होता है। इस पूरी घटना में श्रीलंकाई सरकार अपने नागरिक के जीवन की रक्षा के लिए अब निरंतर प्रयास कर रही है।

श्रीलंका के विदेश मंत्रालय ने मामले की गंभीरता और संवेदनशीलता को समझते हुए एक विशेष कानूनी और कूटनीतिक प्रतिनिधिमंडल सउदी अरब भेजा है। श्रीलंकाई जन प्रतिनिधि और मानवाधिकार संगठन लगातार सउदी प्रशासन से संपर्क साध रहे हैं और सज को माफ करने या कम से कम मृत्युदंड को वापस कारावास में बदलने की मार्मिक अपील कर रहे हैं। हालांकि, सउदी अरब की न्याय प्रणाली में राज्य या राज का हस्तक्षेप बहुत सीमित स्थितियों में ही होता है, विशेषकर जब मामला ईशनिंदा जैसे अत्यंत संवेदनशील विषय से जुड़ा हो। अनोचन का मामला केवल एक व्यक्ति या एक परिवार की त्रासदी नहीं है, बल्कि यह संपूर्ण विश्व के मानवाधिकारों के संरक्षण और न्याय की समानता पर एक बहुत बड़ा प्रश्नचिह्न लगाता है। इस पूरे मामले में न्याय का दोहरा मापदंड पूरी तरह से स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

जिस व्यक्ति ने सबसे पहले उकसाने वाली टिप्पणी की थी और एक हिंदू देवता का घोर अपमान किया था, उस पर वहां के प्रशासन द्वारा कोई कानूनी कार्रवाई नहीं की गई। उसके निंदनीय कृत्य को पूरी तरह नजरअंदाज कर दिया गया, जबकि उसी उकसावे में आकर एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया देने वाले व्यक्ति को सीधे मृत्युदंड दे दिया गया। न्याय का मूल सिद्धांत यही कहता है कि अपराध की गंभीरता के अनुपात में ही सजा होनी चाहिए। केवल एक भावनात्मक टिप्पणी के लिए किसी का जीवन छीन लेना आधुनिक सभ्य समाज के किसी भी मानवीय मानदंड पर उचित नहीं उहराया जा सकता। इसके अतिरिक्त, यह हृदयविदारक घटना मध्य पूर्व में काम करने वाले लाखों एशियाई कामगारों की असुरक्षा और उनकी दयनीय स्थिति को भी पूरी तरह से उजागर करती है। रोजगार के लिए जाने वाले इन श्रमिकों को वहां के कठोर स्थानीय कानूनों के बारे में कुछ नहीं पता होता।

वे अपने घरेलू परिवेश की तरह ही वहां भी आभासी मंचों पर स्वतंत्र रूप से व्यवहार करते हैं, जिसके परिणाम कई बार ऐसे ही घातक सिद्ध होते हैं। अब समय की मांग यह है कि सभी देश अपने नागरिकों को विदेश भेजने से पूर्व वहां के कानूनों, परंपराओं और संवेदनशीलताओं के बारे में गहन और अनिवार्य प्रशिक्षण दें। अंततः, अनोचन शिवरासा का जीवन अब पूरी तरह से अंतरराष्ट्रीय दबाव, मानवाधिकार संगठनों की अपीलों और सउदी अरब के शासकों की दयालुता पर निर्भर है। यह पूरा प्रकरण दुनिया के लिए एक कठोर चेतावनी है कि आभासी दुनिया में किए गए कृत्य वास्तविक दुनिया में कितनी भयानक तबाही ला सकते हैं। न्याय का वास्तविक उद्देश्य मनुष्य में सुधार लाना होना चाहिए, न कि केवल प्रतिशोध लेना। मानवता यही आशा कर रही है कि उस निर्दोष युवा को जल्द ही जीवनदान मिल सके।

### श्रद्धांजलि

**भा**रतीय सिनेमा में कुछ आवाजें केवल सुनाई नहीं देतीं, वे भीतर तक उतरती हैं और हमेशा के लिए अपनी जगह बना लेती हैं। कुछ चेहरे केवल पर्दे पर दिखाई नहीं देते, वे स्मृति का हिस्सा बन जाते हैं। नाना पाटेकर ऐसी ही एक आवाज, ऐसा ही एक चेहरा और ऐसा ही एक कलाकार थे। 8 अक्टूबर 2026 को 75 वर्ष की आयु में उनके निधन के साथ भारतीय सिनेमा ने एक ऐसे अभिनेता को खो दिया, जिसकी पहचान केवल उसकी फिल्मों से नहीं, बल्कि उसके अभिनय की तीव्रता, संवाद की ताकत और सामाजिक संवेदना से बनी थी। गोवा स्थित उनके आवास पर वे अचेत पाए गए और उन्हें अस्पताल ले जाया गया, जहां चिकित्सकों के प्रयासों के बावजूद उन्हें बचाया नहीं जा सका। नाना पाटेकर का जाना इसलिए भी असाधारण क्षति है क्योंकि वे उन कलाकारों में थे जिन्होंने अभिनय को केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं माना। उनके लिए किरदार एक चेहरा नहीं, एक विचार था; संवाद केवल शब्द नहीं, बल्कि समाज से संवाद करने का माध्यम था। वे जब पर्दे पर बोलते थे तो लगता था जैसे कोई अभिनेता संवाद नहीं बोल रहा, बल्कि हमारे आसपास का कोई व्यक्ति अपनी पीड़ा, अपना गुस्सा और अपनी बेचैनी हमारे सामने रख रहा है।

1 जनवरी 1951 को महाराष्ट्र में जन्मे नाना पाटेकर ने अपने अभिनय जीवन की शुरुआत रंगमंच से की। रंगमंच ने उन्हें अभिनय की वह बुनियादी समझ दी, जिसने आगे चलकर उन्हें हिंदी और मराठी सिनेमा के सबसे अलग और प्रभावशाली अभिनेताओं में शामिल किया। उनका अभिनय चमक-दमक पर आधारित नहीं था। उसमें बनावट कम और जीवन की कठोर सच्चाइयों की झलक अधिक थी। नाना पाटेकर की सबसे बड़ी विशेषता थी उनकी संवाद अदायगी। उनकी आवाज में एक खास तरह की खुरदुराहट थी, लेकिन वही खुरदुरापन उनके पात्रों को विश्वसनीय बनाता था। वे संवाद को केवल बोलते नहीं थे, उसके पीछे छिपे भाव को जीते थे। कभी ऊंची आवाज में उनका आक्रोश फूटता था, तो कभी धीमी आवाज में कहा गया एक वाक्य भी दर्शक के मन में गहरी छाप छोड़ जाता था। उनकी आंखें, चेहरे के भाव, शरीर की मुद्रा और संवादों के बीच का मौन सब मिलकर अभिनय की एक ऐसी भाषा रचते थे, जो लंबे समय तक याद रहती थी।

अंकुश, प्रतिघात, परिंदा, क्रांतिवीर, तिरंगा, अब तक छप्पन, वेलकम और नटसम्राट जैसी फिल्मों ने उनके अभिनय के अलग-अलग रंग दिखाए। गंभीर भूमिकाओं से लेकर हास्य तक, पुलिस अधिकारी से लेकर रंगमंच के वृद्ध अभिनेता तक, उन्होंने अपने पात्रों में ऐसी विविधता दिखाई जो उनकी अभिनय क्षमता की व्यापकता को प्रमाणित करती है। परिंदा में हिंसा और अपराध की दुनिया, क्रांतिवीर में व्यवस्था

## नाना पाटेकर : संवाद खामोश – गुंज बाकी

के प्रति आक्रोश, अब तक छप्पन में अपराध और कानून की जटिलता तथा नटसम्राट में कलाकार के अकेलेपन और पारिवारिक संबंधों की पीड़ा इन सभी भूमिकाओं में नाना अलग दिखाई दिए, लेकिन हर बार उनका अभिनय विश्वसनीय रहा। क्रांतिवीर का नाना दर्शकों के भीतर व्यवस्था के प्रति सवाल पैदा करता है। वह केवल एक फिल्मी पात्र नहीं रह जाता, बल्कि उस आम आदमी का प्रतीक बन जाता है जो अपने आसपास भ्रष्टाचार, अन्याय और सामाजिक विसंगतियों को देखकर बेचैन है। यही नाना पाटेकर की ताकत थी कि वे अपने पात्रों को समाज से काटकर नहीं देखते थे।



गुस्सा था, लेकिन वह गुस्सा केवल प्रदर्शन नहीं था; उसके पीछे एक बेचैनी थी। उसमें समाज को लेकर चिंता थी। वे उन अभिनेताओं में नहीं थे जिन्हें देखकर दर्शक केवल 'स्टार' को देखता है। नाना के साथ अक्सर ऐसा हुआ कि दर्शक अभिनेता को भूलकर पात्र को देखने लगा। यही किसी अभिनेता की सबसे बड़ी सफलता होती है। जब अभिनेता स्वयं गायब हो जाता है और उसका किरदार दर्शक की स्मृति में जीवित रह जाता है, तब अभिनय कला अपने चरम पर पहुंचती है। नाना पाटेकर की लोकप्रियता का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी था कि उन्होंने पारंपरिक नायक की सीमाओं को स्वीकार नहीं



नाना पाटेकर की कहानी केवल अभिनेता नाना पाटेकर की कहानी नहीं है। वे सामाजिक सरोकारों से जुड़े व्यक्ति के रूप में भी जाने गए। किसानों और ग्रामीण समाज के मुद्दों को लेकर उनकी सक्रियता और नाम फाउंडेशन के माध्यम से किए गए कार्यों ने उनके सार्वजनिक व्यक्तित्व का एक दूसरा पक्ष सामने रखा। उनके लिए समाज से जुड़ाव केवल पर्दे तक सीमित नहीं था। उनके निधन के बाद आई श्रद्धांजलियों में भी उनके अभिनय के साथ उनके सामाजिक योगदान को याद किया जा रहा है। नाना पाटेकर को लोकप्रिय बनाने में उनकी फिल्मों के संवादों की भी बड़ी भूमिका रही। उनके संवादों में साहित्यिक अलंकरण कम और जीवन की सीधी भाषा अधिक थी। यही कारण है कि उनके कई संवाद फिल्मों की सीमा पार करके आम बोलचाल और लोकप्रिय संस्कृति का हिस्सा बने। उनके संवादों में

किया। उनके पात्र हमेशा आदर्श नहीं थे। वे क्रोधित होते थे, टूटते थे, गलतियां करते थे, कमजोर पड़ते थे और फिर संघर्ष करते थे। इसीलिए उनके पात्रों में जीवन की वास्तविकता दिखाई देती थी। उनमें पूर्णता नहीं थी, लेकिन मनुष्य था। आज जब सिनेमा बदल रहा है, जब डिजिटल प्लेटफॉर्म और ओटीटी ने कहानी कहने के नए रास्ते खोले हैं, तब नाना पाटेकर का अभिनय और अधिक प्रासंगिक दिखाई देता है। आज का दर्शक बनावटी नायक से अधिक वास्तविक पात्रों को स्वीकार करता है। नाना ने यह बात उस समय समझ ली थी जब मुख्यधारा का सिनेमा अभी भी पारंपरिक स्टार सिस्टम के मजबूत प्रभाव में था। उनकी विरासत उनकी फिल्मों से कहीं बड़ी है। वह उन कलाकारों की विरासत है जिन्होंने यह साबित किया कि अभिनेता का काम केवल दर्शकों का मनोरंजन करना नहीं, बल्कि

### डॉ. उमेश कुमार

उन्हें सोचने पर मजबूर करना भी है। नाना पाटेकर जब पर्दे पर व्यवस्था से सवाल करते थे, तो दर्शक केवल फिल्म नहीं देखता था; वह अपने आसपास की दुनिया को भी नए नजरिए से देखने लगता था। आज नाना पाटेकर हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनका अभिनय हमारे बीच रहेगा। परिंदा का संघर्ष, क्रांतिवीर का आक्रोश, अब तक छप्पन का कठोर यथार्थ, वेलकम का हास्य और नटसम्राट की संवेदना ये सभी उनके अभिनय की अलग-अलग स्मृतियां हैं। उनकी आवाज अब पर्दे के बाहर सुनाई नहीं देगी, लेकिन उनकी आवाज की गुंज आने वाली पीढ़ियों के कलाकारों और दर्शकों तक पहुंचती रहेगी। किसी कलाकार की मृत्यु उसके जीवन का अंत होती है, उसकी कला का नहीं। नाना पाटेकर के मामले में यह बात और भी अधिक सच है। उन्होंने जो किरदार निभाए, वे भारतीय सिनेमा की स्मृति में जीवित रहेंगे। उन्होंने जो संवाद बोले, वे आने वाले वर्षों तक दोहराए जाएंगे। और उन्होंने अभिनय के जिस मानक को स्थापित किया, वह नए कलाकारों के लिए प्रेरणा बना रहेगा। नाना पाटेकर के जाने से भारतीय सिनेमा का एक प्रभावशाली अध्याय समाप्त हुआ है। एक ऐसी आवाज खामोश हुई है जिसमें आक्रोश भी था, करुणा भी; व्यंग्य भी था और संवेदना भी। लेकिन शायद महान कलाकारों की यही नियति है-वे चले जाते हैं, मगर अपने किरदारों में हमेशा जीवित रहते हैं। नाना पाटेकर अब हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन भारतीय सिनेमा में उनकी आवाज लंबे समय तक सुनाई देती रहेगी। पर्दा गिर गया है, कलाकार चला गया है, लेकिन किरदार अभी जीवित हैं।

### पर्दा गिर गया, नाना अमर हो गए...!

जिस आवाज में था सच का साहस, जिस आँखों में था ःददः, देता राहत। जिसके संवाद में जीवन बोलता था, आज वो ही कलाकार मौन हो गया। ‘परिंदा’ में उसके संघर्ष की आग थी, ‘तिरंगा’ में जज्बा-‘प्रहार’ स्वाभिमान। ‘अग्निसाक्षी’ संवेदनाओं की गहराई, ‘क्रांतिवीर’ की आवाज़ नाना महान। ‘खामोशी’ में मौन हुआ रुदन संगीत, ‘अब तक छप्पन’ में हैं कठोर चेहरा। फिर ‘वेलकम’ में हँसकर आ उठरा, अंदर ईसाियत की जीत का सेहरा। जब ‘नटसम्राट’ बनके उभरकर आए, सब को लगा रंगमंच स्वयं बोल पड़ा। संवाद नहीं केवल शब्द, जीवन चुला, किरदारों में सदा नाना रहता है खड़ा।

– संजय एम तराणेकर





